REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2024

"जनजाति क्षेत्र का साक्षरता परिदृश्य एवं सामाजिक परिवर्तन शहडोल संभाग के विशेष संदर्भ में"

डॉ. जियालाल राठौर
भूगोल विभाग, शासकीय महाविद्यालय जैतपुर, शहडोल (म.प्र.)

सारांशः—

मानव भूगोल के विस्तारित और विकसित होने के आधार—पथ साक्षरता एवं शिक्षा है, बिना शिक्षा के उन्न्यन तथा समय सापेक्ष जानकारी के अभाव में कोई भी भौगोलिक क्षेत्र उन्नति, और समृद्धि के मार्ग पर अग्रसर नहीं हो सकता। साक्षरता व वैयनितक गुण है, जो किसी व्यक्ति के पढ़ने और लिखने की योग्यता को प्रकट करती है। साक्षरता मनुष्य के सोच विचार और कार्य करने की योग्यता में वृद्धि करती है, और उसे नवीन खोजों की दिशा में प्रवृत्त करती है। जिसमें सामाजिक, आर्थिक एवं सॉस्कृतिकप्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है समाज में व्याप्त, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, धार्मिक, कट्टरता, सामाजिक,भेदभाव, निर्धनता आदि को दूर करने में साक्षरता का महत्व सर्वोपरि है। आज के वैज्ञानिक तकनीकी युग में साक्षरता एवं शिक्षा का महत्व और भी बढ़ता जा रहा है।

कूट शब्दः— साक्षरता, जनसंख्या, प्रवास, सामाजिक, आर्थिक, कारण शिक्षा, काल सौन्दर्य।

प्रस्तावना :—

घुम्मकड़ संस्कृति के पक्षधर जनजातीय समुदाय लिपकीय ज्ञान की अपेक्षा, प्राकृतिक ज्ञान और अनुभव ज्ञान को वरीयता देते है। पर समय के साथ आये बदलावोंमें जनजातीय समुदाय को नये परिक्षेत्र में प्रविष्ट किया । यह परिक्षेत्र में ज्ञान विज्ञान और शिक्षा का विभिन्न जनजातीय समुदाय में शिक्षा के प्रति आकर्षक बढ़ा है। आजादी के पश्चात शिक्षा के लिए प्रारंभ हुई शहडोल संभाग जनजातीय बाहुल्य परिक्षेत्र है, जहाँ विभिन्न प्रकार की जनजातियों का आवास है, जिनकी जीवन शैली, रूचि अभिरूचि में स्वाभाविक एकता होते हुए भी कुछ परंपरागत एवं क्षेत्रानुसार वैविध्य है।

वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा भी रोटी कपड़ा और मकान आदि की तरह मूलभूत आवश्यकता बनती जा रही है। निरक्षरता या अशिक्षा मानव को अज्ञानी विवेकहीन रूढ़िवादी व धर्मशील बनाती है, साथ ही अशिक्षा, उसके स्वाभिमान पर भी करारा घाट करती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन क्षेत्र शहडोल संभाग की साक्षरता वृद्धि दर का ऑकलन करनेसे स्पष्ट होता है कि संभाग में साक्षरता की वृद्धि दर क्रमिक बढ़ी है। आजादी पूर्व संभागीय क्षेत्र में साक्षरता अति न्यून की अबादी के साथ ही शुरू हुए, नव सोपानों की शिक्षा की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट कराया।

अध्ययन क्षेत्रः—

शहडोल संभाग के नवीन संभागों में से एक है। भारतीय मानचित्र में इस संभाग की स्थिति 23°35′ उतरी अक्षांश से 24°20′ उतरी अक्षांश तथा 28°20′ पूर्वी देशांतर से 82°45′ पूर्वी देशांतर के मध्य है। 23°5′ उतरी अक्षांश के कर्क रेखा इस संभाग को दो बराबर भागों में विभाजित करती है। इस संभाग के अन्तर्गत 13 तहसील, 12 विकासखण्ड, 03 जिलें शहडोल, उमारिया, अनुपपूर सम्मिलित है।

अध्ययन उद्देश्यः—

वर्तमान शोध प्रपत्र का मुख्य उद्देश्य मध्यप्रदेश राज्य के शहडोल संभाग के स्थानिक साक्षरता का प्रतिरूप को प्रकाश में लाना है। ताकि इस अध्ययन के आधार पर शोध क्षेत्र को बेहतर शिक्षा सुविधा प्रदान की जा सके।

1) अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा गत सुविधा की स्थिति को समझाना।
2) अध्ययन क्षेत्र शहडोल संभाग की दशकीय वृद्धि साक्षरता में प्रकाश डालना।
3) अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा के विकास में सामाजिक आर्थिक कारकों की भूमिका को समझाना।
4) जनजातीय जनसंख्या एवं घनत्व का तुलनात्मक अध्ययन।

विधि तंत्रः—

प्रस्तुत शोध प्रपत्र जनजातीय क्षेत्र का साक्षरता परिदृश्य स्थानिक वितरण प्रतिरूप आकड़ों का संकलन एवं विश्लेषण किया गया। जिसमें आकड़ों को प्राथमिक एवं द्वितीयक आकड़ों का संकलन विभिन्नप्रकाशित पुस्तकों, पत्र—पत्रिकाओं एवं जिला सांख्यिकीय पुस्तिका, जनगणना पुस्तिका, गजेटियर, विभिन्न आकड़ों को प्राप्त किया गया है।

मानचित्र विश्लेषण पद्धतिः—

मानचित्र भूगोल के हृदयहोते हैं और भूगोलवेताओं के लिए एक अस्त्र के समान हैं क्योंकि आकड़ों का संग्रह अवस्थिति की समस्याएँ और अवधारणाओं का परीक्षण मानचित्रों द्वारा संभव हो जाता है।

शोध कार्य में अपनाई गई पद्धतियाँ निम्नानुसार है—

1) वैज्ञानिक पद्धति।
2) तुलनात्मक पद्धति।
3) सांख्यिकीय पद्धति।
4) मनोवैज्ञानिक पद्धति।

साक्षरता की मापन विधियाँः—

साक्षरता की मापन के लिए कई प्रकार के सूचकाकों तथा विधियों का प्रयोग किया जाता है। इनके साथ ही जनगणना की अनियमितता तथा जनगणना की असमानता के कारण विभिन्न विकासखण्डों की साक्षरता की तुलनीयता कम हो जाती है।

$$\text{अशोधित साक्षरता दर—साक्षरता दर} = \frac{\text{कुल साक्षरता जनसंख्या}}{\text{कुल जनसंख्या}} \times 100$$

साक्षरता को प्रमाणित करने वाले कारकः—

शहडोल संभाग के विभिन्न जिलों, देशों, प्रदेशों तथा समाजों की साक्षरता दर में असमानता पायी जाती है। जिसके लिए आर्थिक, सामाजिक एवं जनांकिकीय उत्तरदायी है।

(अ)आर्थिक कारक
(1) जीवन स्तर
(2) शिक्षा की लागत
(3) तकनीकी विकास का स्तर

ब)सामाजिक कारक
(1) शिक्षण संस्थाओं का प्रसार
(2)समाज की महिलाओं की स्थिति
(3)शिक्षा के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण

जनसंख्या घनत्वः–

किसी प्रदेश या भू–क्षेत्र के कुल क्षेत्रफल और उसकी कुल जन संख्याओं का अनुपात अंकगणितीय घनत्व कहलाता है इसके द्वारा प्रति व्यक्ति इकाई क्षेत्र में व्यक्तियों की संख्या द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है।

$$\text{जनसंख्या का घनत्व} = \frac{\text{कुल जनसंख्या}}{\text{कुल क्षेत्रफल}}$$

सारणी क्र.–1.1

शहडोल संभाग में जनजातीय जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व(वर्ष2011)

क्र.	विकासखण्ड	कुल क्षेत्रफल	कुल जनसंख्या	कुल अनुसूचित जनजाति	कुल जनसंख्या से प्रतिशत	घनत्व प्रति वर्ग कि.मी.
1.	ब्यौहारी	1095.09	188149	83120	44.17	75
2.	जयसिंहनगर	1532.43	185061	94432	51.02	66
3.	पुष्पराजगढ़	1763.72	230005	176481	23.50	100
4.	पाली	873.61	107659	63542	59.02	72
5.	गोहपारू	911.43	108136	67292	62.22	73
6.	सोहागपुर	811.60	182775	99938	53.04	123
7.	बुढ़ार	1259.51	202885	106011	52.05	84
8.	जैतहरी	893	192255	44433	47.86	61
9.	अनुपपूर	602.11	305877	103377	33.49	171
10.	कोतमा	408.41	120533	33992	28.21	83
11.	मानपुर	1946.52	192255	228975	39.86	117
12.	करकेली	19431	302184	147389	42.62	75

स्त्रोत –जिला सांख्यिकी पुस्तिका शहडोल, अनुपपूर, उमरिया, वर्ष 2011

क्षेत्रीय वैविध्य का विश्लेषणः–

सारणी क्रमांक 1.1 से स्पष्ट है कि शहडोल संभाग अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का विकासखण्डवार वितरण एवं घनत्व में अन्तराल पाया गया है। वर्ष 2011 के आंकड़े के अनुसार जिलेवार विकासखण्डों में क्षेत्रीय अन्तराल पाये जाने का प्रमुख कारण आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ उत्तरदायी है। शहडोल संभाग में जनजातीय जनसंख्या का क्षेत्रीय वितरण एवं घनत्व तीन श्रेणी में विभाजित किया गया है।

1) उच्च जनजातीय जनसंख्या घनत्व के क्षेत्रः–

वर्ष 2011 के आंकड़े के अनुसार अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का सबसे उच्च घनत्व 171 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. अनुपपूर विकासखण्ड में पाया गया है। यह घनत्व सोहागपुर बेसिन के कुल अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या घनत्व प्रति वर्ग कि.मी. से अधिक पाया गया है, जबकि संपूर्ण प्रदेश की तुलना में कम है। उच्च जनजातीय जनसंख्या घनत्व होने का कारण भौतिक दशाएँ एवं क्षेत्र की सामाजिक संरचना उत्तरदायी है।

2) मध्यम जनजातीय जनसंख्या घनत्व के क्षेत्रः–

अध्ययन क्षेत्र में मध्यम जनजातीय जनसंख्या घनत्व के क्षेत्र के अंतर्गत ऐसे विकासखण्ड जहाँ जनजातीय जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व 100 से 150 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. पाया गया है। क्षेत्र के मध्यम जनजातीय जनसंख्या घनत्व के अंतर्गत विकासखण्ड पुष्पराजगढ़, सोहागपुर, मानपुर आदि पाये गये है।

3) निम्न जनजातीय जनसंख्या घनत्व के क्षेत्रः—

शहडोल संभाग में निम्न जनजातीय जन संख्या घनत्व में ऐसे विकासखण्ड 'ाामिल किये गये हैं। निम्न घनत्व के अंतर्गत विकासखण्ड ब्यौहारी, बुढ़ार, जयसिंहनगर, गोहपारू, पाली, करकेली, जैतहरी, कोतमा, पुष्पराजगढ़ आदि प्रमुख है।

सारणी क्र.— 1.2

शहडोल संभाग अनुसूचित जनजाति साक्षरता दर 2001 या 2011 का तुलनात्मक विश्लेषण

क्र.	विकासखण्ड	कुल साक्षरता प्रतिशत 2001		कुल साक्षरता प्रतिशत 2011		दशकीय वृद्धि दर
1	ब्यौहारी	18933	36.45	36017	43.33	6.88
2	जयसिंहनगर	25099	31.90	45154	47.81	15.91
3	गोहपारू	24163	40.99	35126	52.19	11.2
4	सोहगपुर	22513	26.33	39362	39.38	13.05
5	बुढ़ार	29791	32.58	47557	46.34	13.76
6	कोतमा	7152	36.21	11653	50.25	14.04
7	पुष्पराजगढ़	64338	43.97	86211	49.79	5.82
8	अनुपपूर	13996	38.35	20886	50.61	12.26
9	जैतहरी	24594	27.63	38039	47.51	19.88
10	मानपुर	22801	39.56	40761	45.41	5.85
11	करकेली	32622	31.65	56552	43.30	11.65
12	पाली	17973	37.38	25387	46.65	9.27
योग	**शहडोल संभाग**	**303975**	**35.80**	**482705**	**42.42**	**6.62**
	मध्यप्रदेश	**3586280**	**31.33**	**5723449**	**37.36**	**6.63**

स्त्रोत— जिला सांख्यिकी पुस्तिका शहडोल, उमरिया, अनुपपूर 2011

क्षेत्रिय वैविध्य परिवर्तनः—

सारणी क्र. 1.2 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में विकासखण्डवार अनुसूचित जनजाति साक्षरता दर 2001 से 2011 का तुलनात्मक दशकीय वृद्धि दर ज्ञात है। अध्ययन क्षेत्र 2001 में **35.80** प्रतिशत एवं 2011 में **42.42** प्रतिशत है, जिसमें शहडोल की साक्षरता दर **6.62** प्रतिशत है।क्षेत्रीय वैविध्य परिवर्तन को तीन भागों में विभाजित किया गया है।

1) उच्च अनुसूचित जनजाति साक्षरता वृद्धि दर वाले क्षेत्रः—

अध्ययन क्षेत्र में उच्च साक्षरता अनुसूचित जनजातियों की भागीदारी विभिन्न विकासखण्डों मेंक्रमशः जैतहरी (19.88%), जयसिंहनगर (15.91%), सोहागपुर (13.05%) है। यहां उच्च साक्षरता दशकीय वृद्धि दर होने के प्रमुख कारण इस क्षेत्र में शिक्षा, साक्षरता, सुविधा उच्च पायी गई है।

2) मध्य अनुसूचित जनजाति साक्षरता वृद्धि दर वाले क्षेत्रः—

अध्ययन क्षेत्र में मध्य साक्षरता अनुसूचित जनजातियों की भागीदारी विभिन्न विकासखण्डों में क्रमशः अनुपपूर (12.26%), करकेली (11.65%), गोहपारू(11.2%), पाली (9.27%)दशकीय वृद्धि पायी गई है।

3) निम्न अनुसूचित जनजाति साक्षरता वृद्धि दर वाले क्षेत्रः—

अध्ययन क्षेत्र में निम्न साक्षरता अनुसूचित जनजातियोंकी भागीदारी विभिन्न विकासखण्डों में क्रमशः ब्यौहारी (6.88%), मानपुर (5.85%), पुष्पराजगढ़ (5.82%) दशकीय वृद्धि पायी गई है। जो कि इन विकासखण्डों

में साक्षरता वृद्धि दर कम पायी गयी है क्योंकि वहां शिक्षा एवं स्कूलों की सुविधा के साधन नहीं पाये गये जिनमें धीरे–धीरे वृद्धि हो रही है।

सामाजिक परिवर्तनः–

अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत जनजातीय समाज मानक सभ्यता के प्रतीक है, ऐसे घुमक्कड़ जाति के लोगों का शिक्षा में कोई योगदान नहीं था। धीरे–धीरे उन जातियों को सरकार के द्वारा योजनाओं का लाभ मिलने लगा तो जीवन में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तन हुआ वर्तमान में उनके रहन–सहन, रीति–रिवाज, भाषा–शैली में सुधार पाया गया।

सुझावः–

1) शिक्षा से सम्बंधित आधारभूत संरचना को बढ़ावा तथा गुणवत्ता में सुधार लाना।
2) शैक्षिक संस्थाओं कल्याणकारी, योजनाओं तथा शत् प्रतिशत नामांकन जैसे कार्यक्रमों के साथ साथ अनुदानित और पोषण कार्यक्रमों को बढ़ावा देना चाहिए।
3) बालिका शिक्षा, प्रौढ़ साक्षरता और गैर–संस्थागत शैक्षिक कार्यक्रमों को प्रभावी रूप से क्रियान्वित करना चाहिए।

निष्कर्षः–

प्रस्तुत शोध अध्ययन क्षेत्र शहडोल संभाग की अनुसूचित जनजाति साक्षरता वृद्धि दर पिछले दशक से लगातार वृद्धि हुई है। महिला साक्षरता तुलनात्मक रूप से पुरूषों से बहुत कम है। जिसका मुख्य कारण महिलाओं का कार्य क्षेत्र घर की भागीदारी में सीमित होना, महिलाओं के आवागमन में कमी, शिक्षा और रोजगार का प्रभाव महिला अनुकूल कम होना, शिक्षा की सीमित उपलब्धि तथा गरीबी आदि है। सामान्य साक्षरता दर बढ़ने के साथ ही महिलाओं का साक्षर होना सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से आसान हो गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1) मौर्य एस.डी. जनसंख्या भूगोल शारदा पुस्तक भवन प्रयागराज पृ.सं.325–41।
2) तिवारी, शिवकुमार 1999–म.प्र. की जनजातीय संस्कृति म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल पृ.सं. 120–125।
3) चांदना, आर.सी. 2004 जनसंख्या भूगोल कल्याणी पब्लिकेशन, पृष्ठ सं. 195–197।
4) खण्डेवाल 2017 डॉ. नीलम जनसंख्या भूगोल अंकित पब्लिकेशन पृष्ठ 95–98।
5) जिला सांख्यिकी पुस्तकालय, शहडोल, उमरिया, अनुपपूर 2001–2011 तक।
6) www.mp.gov.in
7) www.census.in
8) www.trible.gov.in